साल्मोनेलोसिस

परिचय

साल्मोनेलोसिस एक आम खाद्य-जनित रोग है, जो **साल्मोनेला**नामक जीवाणु के कारण होता है। यह रोग मनुष्यों और जानवरों की आँतों को प्रभावित करता है। यह बीमारी मुख्य रूप से दूषित भोजन और पानी के सेवन से फैलती है। जहाँ साफ-सफाई की कमी होती है, वहाँ यह रोग अधिक पाया जाता है।

साल्मोनेला क्या है?

साल्मोनेला एक प्रकार का जीवाणु है जो मुर्गी, गाय, सूअर, पक्षियों और सरीसृपों की आँतों में पाया जाता है। जब मनुष्य इस जीवाणु से दूषित भोजन या पानी का सेवन करता है, तो संक्रमण हो जाता है। साल्मोनेला के कई प्रकार होते हैं, जो पेट और आँतों की बीमारी का कारण बनते हैं।

साल्मोनेलोसिस के कारण

- यह रोग मुख्य रूप से निम्नलिखित कारणों से होता है:
- कच्चे या अधपके अंडे
- कच्चा या अधपका मांस, विशेषकर चिकन
- बिना उबाला हुआ दूध और दुग्ध
- दूषित फल और सब्जियाँ
- गंदा या अशुद्ध पानी
- शौच के बाद या जानवरों को छूने के बाद हाथ न धोना भी संक्रमण का कारण बन सकता है।

साल्मोनेलोसिस के जोखिम कारक

जो कारक इस बीमारी के होने की संभावना बढ़ाते हैं, उन्हें जोखिम कारक कहते हैं।

कमजोर प्रतिरक्षा प्रणाली वाले लोग: जैसे शिशु, छोटे बच्चे, वृद्ध व्यक्ति तथा HIV/AIDS, कैंसर या अन्य दीर्घकालिक बीमारियों से पीड़ित लोग, इस रोग के प्रति अधिक संवेदनशील होते हैं। **खराब स्वच्छता वाले क्षेत्रों:** विशेषकर विकासशील देशों की यात्रा जहाँ भोजन और पानी की सुरक्षा उचित नहीं होती

कुछ दवाओं का उपयोग: जैसे पेट के अम्ल को कम करने वाली एंटासिड दवाएँ और लंबे समय तक एंटीबायोटिक का सेवन भी संक्रमण की संभावना बढ़ा देता है।

सूजन संबंधी आंत्र रोग: जैसे क्रोहन रोग और अल्सरेटिव कोलाइटिस से ग्रस्त व्यक्तियों में भी साल्मोनेलोसिस होने का खतरा अधिक रहता है।

लक्षण

संक्रमण के **6 से 48 घंटे** बाद लक्षण दिखाई देते हैं। प्रमुख लक्षण हैं:

दस्त, बुखार और पेट में ऐंठन या मरोड़ शामिल होते हैं। रोगी को मितली (जी मिचलाना) और उल्टी हो सकती है। इसके साथ ही सिरदर्द महसूस होना आम है। बीमारी के दौरान शरीर में कमजोरी आ जाती है और बार-बार दस्त व उल्टी के कारण **डिहाइड्रेशन (शरीर में पानी की कमी)** हो सकती है, जिससे मुँह सूखना, पेशाब कम होना और अत्यधिक थकान जैसे लक्षण दिखाई देते हैं।

- अधिकतर स्वस्थ लोगों में यह बीमारी **4–7 दिनों** में ठीक हो जाती है। लेकिन बच्चों, बुजुर्गों और कमजोर प्रतिरक्षा वाले लोगों में यह गंभीर हो सकती है।

साल्मोनेलोसिस की जटिलताएँ

अधिकतर लोग बिना किसी समस्या के ठीक हो जाते हैं, लेकिन कुछ मामलों में जटिलताएँ हो सकती हैं।

गंभीर डिहाइड्रेशन :लगातार दस्त और उल्टी के कारण गंभीर डिहाइड्रेशनहो सकता है, जो समय पर उपचार न मिलने पर जानलेवा भी हो सकता है।

बैक्टीरीमिया (रक्त संक्रमण) :कभी–कभी बैक्टीरिया रक्त में प्रवेश कर जाता है, जिसे बैक्टीरीमिया (रक्त संक्रमण) कहते हैं,

इससे संक्रमण शरीर के अन्य अंगों तक फैल सकता है: हड्डियों में संक्रमण (ऑस्टियोमायलाइटिस), जोड़ों में संक्रमण (सेप्टिक आर्थराइटिस), हृदय के वाल्व में संक्रमण (एंडोकार्डाइटिस) तथा मस्तिष्क और रीढ़ की हड्डी में संक्रमण (मेनिन्जाइटिस) हो सकता है। कुछ रोगियों में रिएक्टिव आर्थराइटिसविकसित हो सकता है, जिसमें जोड़ों में दर्द, सूजन और अकड़न होती है, और यह समस्या महीनों या वर्षों तक बनी रह सकती है।

लंबे समय तक क्रॉनिक कैरियर अवस्था: कुछ लोग लंबे समय तक क्रॉनिक कैरियर अवस्थामें रहते हैं, जिसमें उनमें कोई लक्षण नहीं होते लेकिन वे साल्मोनेला बैक्टीरिया को दूसरों तक फैला सकते हैं।

निदान

साल्मोनेलोसिस का पता लगाने के लिए:

रोगी के लक्षणों की जाँच की जाती है

मल (स्टूल) की जाँच प्रयोगशाला में की जाती ।है।

गंभीर मामलों में रक्त परीक्षण भी किया जा सकता है।

उपचार

हल्के मामलों में विशेष उपचार की आवश्यकता नहीं होती। रोगी को:

डिहाइड्रेशन से बचाव के लिए पर्याप्त मात्रा में तरल पदार्थपीना चाहिए, ओरल रिहाइड्रेशन सॉल्यूशन (ORS) का सेवन करना चाहिए और उचित विश्रामकरना चाहिए। एंटीबायोटिक दवाएँकेवल गंभीर मामलों या उच्च जोखिम वाले रोगियों को ही दी जाती हैं, क्योंकि अनावश्यक उपयोग से दवा प्रतिरोध (एंटीबायोटिक रेजिस्टेंस) विकसित हो सकता है।

गर्भावस्था में साल्मोनेलोसिस

गर्भावस्था के दौरान साल्मोनेलोसिस एक गंभीर बीमारी हो सकती है, क्योंकि इससे माँ और गर्भ में पल रहे शिशु दोनों प्रभावित हो सकते हैं। गर्भावस्था में प्रतिरक्षा शक्ति कुछ कम हो जाती है।

गर्भवती महिला पर प्रभाव

गभीर दस्त और उल्टी,निर्जलीकरण,बुखार और पेट दर्द,कमजोरी

शिशु पर प्रभाव

गर्भपात का खतरा,समय से पहले प्रसव, कम वजन वाला बच्चा,दुर्लभ मामलों में शिशु को संक्रमण

रोकथाम

कच्चे या अधपके अंडे और मांस न खाएँ,बिना उबाले दूध और पनीर से बचें,फल-सब्जियाँ अच्छी तरह धोएँ,साफ और सुरक्षित पानी पिएँ,हाथों की स्वच्छता बनाए रखें

उपचार

गर्भवती महिलाओं को तुरंत डॉक्टर से संपर्क करना चाहिए। गंभीर मामलों में एंटीबायोटिक दी जाती हैं।

बच्चों में साल्मोनेलोसिस

बच्चों में, विशेषकर शिशुओं और छोटे बच्चों में, साल्मोनेलोसिस का खतरा अधिक होता है क्योंकि उनकी प्रतिरक्षा प्रणाली पूरी तरह विकसित नहीं होती।

बच्चों में कारण

दूषित भोजन या पानी,हाथ न धोना,संक्रमित जानवरों से संपर्क,गंदे बर्तनों से दूध पिलाना

लक्षण

दस्त (कभी-कभी खून या बलगम के साथ),बुखार,उल्टी,पेट दर्द,भूख न लगना,निर्जलीकरण

जटिलताएँ

गंभीर निर्जलीकरण,रक्त संक्रमण,मस्तिष्क संक्रमण, बार-बार संक्रमण से विकास में कमी

रोकथाम

शिशुओं को स्तनपान कराना,हाथ धोने की आदत,साफ भोजन,सरीसृप जानवरों से दूरी

बोतलों की अच्छी सफाई

साल्मोनेलोसिस का प्रकोप (Outbreak)

जब एक ही स्रोत से कई लोगों को एक साथ साल्मोनेलोसिस हो जाए, तो इसे प्रकोप कहते हैं।

आउटब्रेक (प्रकोप) के सामान्य कारण

शादी, स्कूल या होटल में दूषित भोजन,भोजन का गलत भंडारण,गंदा पानी,साफ-सफाई की कमी

प्रकोप की पहचान

अचानक दस्त के मरीज बढ़ना,एक जैसे लक्षण,एक ही भोजन का सेवन

नियंत्रण और रोकथाम

दूषित भोजन स्रोत की पहचान और उसे हटाना – संक्रमण फैलाने वाले भोजन या पानी को तुरंत अलग करें और नष्ट करें।

संक्रमित व्यक्तियों को अलग रखना – बीमार व्यक्ति को स्वस्थ लोगों से अलग रखना चाहिए ताकि संक्रमण न फैले।

भोजन को सही तरीके से पकाना और सुरक्षित भंडारण – मांस, अंडे और अन्य खाद्य पदार्थों को पूरी तरह से पकाएं और भोजन को सुरक्षित तापमान पर रखें।

हाथों की स्वच्छता और सफाई – भोजन बनाने और खाने से पहले हाथ धोना आवश्यक है।

मामलों की स्वास्थ्य अधिकारियों को रिपोर्ट करना – संक्रमण फैलने पर स्थानीय स्वास्थ्य विभाग को सूचित करें।

स्वास्थ्य शिक्षा और जन-जागरूकता – लोगों को साफ-सफाई, सुरक्षित भोजन और पानी के महत्व के बारे में जागरूक करना।

निष्कर्ष

साल्मोनेलोसिस एक रोके जा सकने वाला रोग है। सही स्वच्छता, सुरक्षित भोजन और स्वच्छ पानी के उपयोग से इस बीमारी से बचा जा सकता है। जन जागरूकता और खाद्य सुरक्षा इस रोग को नियंत्रित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

डॉ. सोनाली वास्के, एसोसिएट प्रोफेसर, माइक्रोबायोलॉजी विभाग, आर.डी. गार्डी मेडिकल कॉलेज, उज्जैन (म.प्र.)